# अकबर कालीन सचित्र पाण्डुलिपि "रज़्मनामा" (महाभारत) का विश्लेषणात्मक अध्ययन

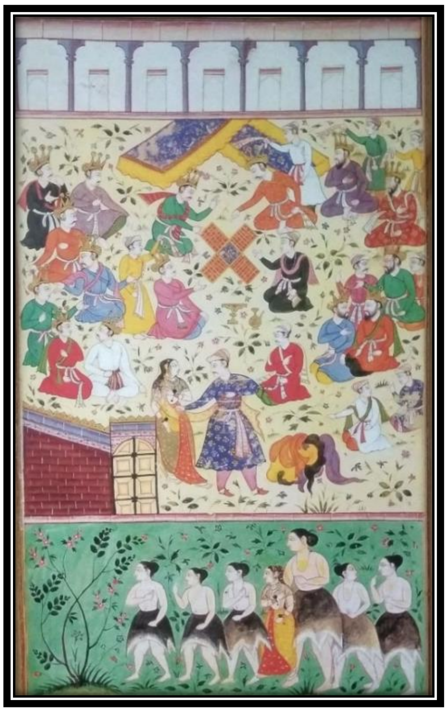

**दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी), दयालबाग़ आगरा से चित्रकला में पी-एच. डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रुपरेखा**


**शोध निर्देशिका** — **शोधार्थिनी**

**डॉ. नमिता त्यागी** — **भावना राठौर**

असिस्टेंट प्रोफेसर

ड्राइंग एण्ड पेटिंग विभाग, कला संकाय



**ड्राइंग एण्ड पेटिंग विभाग, कला संकाय**

**दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),**

**दयालबाग़, आगरा - 282005**

**2022**

**विषय प्रवेश**


- शोध संकल्पना 1-3
- सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन 3-5
- परिकल्पना 5
- उद्देश्य 5-6
- चर 6
- कार्य प्रणाली 6

  अनुसंधान अभिकल्प
- प्रदत्त संकलन 6

  प्राथमिक

  द्वितीयक
- प्रतिदर्श 6
- सीमा 6
- निष्कर्ष 7
- आधुनिक युग में प्रासंगिकता 7

**शोध संकल्पना**

कला एक मूल्यवान एवं व्यापक विरासत है। भारतीय संस्कृति में कला अपनी प्राचीनता व विविधता के लिए विख्यात रही है। भारतीय कला जहाँ एक ओर वैज्ञानिक और तकनीकी आधार रखती है वहीं दूसरी ओर भाव एवं रस को सदैव प्राण तत्व बनाकर रखती है। कला का हर पक्ष इतना सशक्त है कि संवेदन विहीन व्यक्ति में भी वह संवेदना के तीव्र उद्वेग को उत्पन्न कर सकता है, वास्तव में कला मानव मस्तिष्क एवं आत्मा की उच्चत्तम एवं प्रखरतम कल्पना व भावों की अभिव्यक्ति है।

भारत में आदिकाल से ही मानव की प्रगति के साथ-साथ चित्रकला का भी जन्म हुआ, उस समय मनुष्य ने अपनी उन मूक भावनाओं को पत्थरों के यंत्रों के द्वारा टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं द्वारा कृतियों के रुप में गुफाओं चट्टानों की भित्तियों पर अंकित कर दिया था। चित्रकला में मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ कला के क्षेत्र में भी परिवर्तन संभव हुआ, गुफाओं की भित्तियों से निकल कर कला अनेक रुपों में प्रस्फुटित हुयी। अजन्ता में, जोगीमारा गुफा मंदिर कला की अमर कहानी प्रदशित करते हैं। तत्पश्चात् वैदिक काल में चित्रकला की प्रगति का ज्ञान साहित्यिक रचनाओं जैसे- वेदों महाभारत, रामायण व पुराणों में प्राप्त कला-प्रंसगों में हुआ। उत्तरमध्यकालीन साहित्य में चित्रकला का यथेष्ट वर्णन मिलता है। मध्यकालीन युग के आरम्भ के साथ-साथ कागज ग्रन्थ चित्रों का निर्माण बहुताय में हुआ जो कि पोथी चित्रण के रुप में प्राप्त है। भारत में पाल शैली के रुप में पोथियों का विकास हुआ। पाल पोथियाँ बंगाल तथा बिहार में लिखी गई, 10वीं शताब्दी एवं परवर्ती काल की महायान बौद्ध धर्म से सम्बन्धित अनेक पोथियों में चित्र प्राप्त हुए। ताड़ पत्रों से बने पृष्ठों पर देवनागरी लिपी में सुन्दर और कटे-फटे छापे के समान अक्षरों में पोथियाँ लिखी गई। भारत में पाण्डुलिपि चित्रण का स्वरुप 16वीं शताब्दी में मुगल सम्राटों के संरक्षण में भी विकसित हुआ जो 14वीं शताब्दी में विकसित फारसी पाण्डुलिपि-चित्रण पद्धति से प्रेरित है। भारत में मुगल राजवशों का शासन महान शासनों में एक था। उसकी चित्रकला एक सुखद संयोग के रुप में दरबारी भव्यता और भोग विलास का उल्लास अपने प्रकोड़ में संचित किये है। न जाने कितने विदेशी और स्वदेश चित्रकारों के महान परिश्रम और शिल्प साधना के परिणाम स्वरुप मुगल

कला का जन्म हुआ।

सर्वप्रथम बाबर भारतवर्ष में मुगल साम्राज्य के संस्थापक के रुप में आया। बाबर तथा हुमांयु के काल में ईरानी शैली अपने मूल या अपरिवर्तित के रुप में प्रचलित थी। अकबर के शासन काल में इस शैली से एक नवीन कला शैली का विकास हुआ जिसे 'मुगल कला' कहते हैं। मुगल पेंटिग स्कूल की स्थापना अकबर ने ही की थी। अकबर यूरोपीय कला में रुचि रखने वाला पहला सम्राट था, उन्होंने व्यक्तिगत रुप से भारतीय और फारसी कलाकारों के काम की निगरानी की और अपने प्रतिभाशाली कलाकारों पर धन और उपाधियों का लुत्फ उठाया। अकबर के समय में चित्रकला का अत्यधिक विकास हुआ और अनेक प्रकार के चित्र बनाये गये, जिसमें कागजी पुस्तक चित्रों तथा शबीह चित्रों की अधिकता थी। अकबर के समयकाल में हम्जानामा के अतिरिक्त 'शाहनामा', 'जफरनामा', बाकयात-बाबरी (बाबर की आत्मकथा), 'अकबरनामा', 'अनवारे सहेली' (पंचतंत्र का फारसी अनुवाद), 'रामायण', 'दशावतार', 'कृष्णचरित', 'तूतीनामा', 'बाबरनामा' 'रज़्मनामा' (महाभारत का फारसी अनुवाद) आदि ग्रन्थों की सचित्र प्रतिलिपियाँ तैयार की गई। अनेक ऐसी चित्रित पाण्डुलिपियाँ जो कला अध्ययन की प्रक्रिया में अति सहायक सिद्ध हो सकतीं हैं परन्तु इनसे सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी के अभाव में कला की यह अमूल्य धरोहर कला शोधार्थियों से अछूति है।

'रज़्मनामा' (युद्ध की किताब) मुगल सम्राट अकबर द्वारा हिन्दू महाकाव्य महाभारत का पहला फारसी अनुवाद है। फारसी में 'रज्म' का अर्थ है युद्ध और 'नामा' का अर्थ है कहानी, इतिहास अर्थात रज़्मनामा का अर्थ युद्ध की कहानी है। अध्ययन के अनुसार रज़्मनामा का महत्व इसलिए है क्योंकि पहली बार महाभारत का चित्रण किया गया था, तब तक मंदिरों व पत्थरों में केवल इसकी मूर्तियों को तराशा गया था तथा यह पाण्डुलिपि अपने चित्रों के कारण भी महत्वपूर्ण है।

महाभारत हिन्दू पुस्तकों में प्रसिद्ध ग्रन्थ है, और इसमें सभी प्रकार की कहानियाँ और नैतिक प्रतिबंध, सलाह, शिष्टाचार, आचरण, और विज्ञान से संबन्धि मामले शामिल हैं तथा ज्योतिष, युद्ध नीति, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, और धर्मशास्त्र का भी विस्तार से वर्णन किया गया है। 'रज़्मनामा' हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच

धार्मिक गुटबाजी को कम करने के अकबर के लक्ष्य को सम्बोधित करने लिए था। इस भव्य ग्रन्थ का निर्माण संस्कृत के विद्वानों और फारसी अनुवादकों और अनेक कलाकारों द्वारा हुआ। इस ग्रन्थ में लगभग 1,00,000 श्लोकों का अनुवाद शामिल है।

चार सचित्र 'रज़्मनामा' पाण्डुलिपियाँ- प्रथम 1584 और 1586 (1582) के बीच बनाई गयी। जयपुर सिटी पैलेस संग्रहालय में अकबर का मूल 'रज़्मनामा' है। संग्रहालय ने पुस्तक को सन् 1740 ई॰ के 4024 अकबरी रुपये में खरीदा था, द्वितीय प्रति सन् 1598 और 1599 के बीच बनाई गयी, जिसके अंतिम पांच भाग ब्रिटिश पुस्तकालय में हैं तथा अन्य पृष्ठ उत्तरी अमेरिका, यूरोप और भारत के संग्रह में फैले हुए हैं। तृतीय प्रति बिरला पाण्डुलिपियों के रुप में माना जाता है जो कोलकत्ता में कला और संस्कृति के बिरला अकादमी में हैं तथा यह 'रज़्मनामा' सन् 1605 ई॰ का है। अंतिम 'रज़्मनामा' पाण्डुलिपि जिसमें से वर्तमान में केवल दो लघुचित्रों की पहचान की गई है जो सन् 1616-1617 के आसपास अब्दुल रहीम के संरक्षण में बनाया गया था। रज़्मनामा पाण्डुलिपि के पन्नों पर लिखे लेख कलाकारों के साक्ष्य प्रदान करते हैं कि इनको वास्तव में मुगल दरबार में निष्पादित किया गया था। लेखक अबुल फजल की सूची के अनुसार रज़्मनामा पाण्डुलिपि को तैयार करने में अनेक कलाकरों, चित्रकारों का योगदान है जिसमें हिन्दू, मुस्लिम कलाकारों ने मिलकर इस भव्य पाण्डुलिपि को पूर्ण किया। रज़्मनामा के मुख्य कलाकार- दसवंत, बसावन, लाल, अब्दु अस-समद, एक फारसी मास्टर कलाकार और दसवंत के प्रशिक्षक थे, जिन्होंने इस परियोजना का नेतृत्व किया और कुछ कार्यों में स्वयं योगदान दिया। अधिकांश हिन्दू मूल के थे। पौराणिक स्त्रोत सामग्री के ज्ञान के अलावा यह कलाकार इस परियोजना में भारतीय कलात्मक प्रभाव भी लाते हैं।

**सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन**

कला के क्षेत्र में साहित्य का पुनरावलोकन एक आरम्भिक और अनिवार्य कथन है। साहित्य के गहन अध्ययन से समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव प्रस्तुत होता है तथा सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से स्पष्टीकरण में सहायक सिद्ध होता है।

सर्वप्रथम Painting of the Razmnama, The Book of war अशोक कुमार दास द्वारा रचित पुस्तक जिसके अध्ययन से मुझे शोध विषय चयन तथा विषय से संबन्धित जानकारी प्राप्त हुई। डॉ॰ बी॰डी॰ महाजन की पुस्तक 'मध्यकालीन भारत' (1000 ई॰ से 1761 ई॰ तक) के भाग-2 मुगल कालीन भारत, अध्याय 5- अकबर की धार्मिक नीति और अध्याय 12- मुगल कालीन कला और साहित्य, के अन्तर्गत मैंने मुगलों की कला, चित्रकला की उत्पत्ति का अध्ययन किया, तथा यह जाना कि हिन्दू चित्रकला शैली को अकबर का भी संरक्षण प्राप्त है, जिसमें धार्मिक कथानक और धार्मिक ज्ञान तत्वों को उन्होंने मानवीय और दैवीय रुप देकर चित्रित किया है।

पुस्तक- 'महाभारत में सांग्रमिकता' (महाभारत की युद्ध कला) डॉ॰ नन्दकिशोर गौतम (उपाध्याय) निर्मल, निर्मल प्रकाशन, जयपुर यह पुस्तक महाभारत का सूक्ष्म रुप है जिसमें युद्ध के नियम, नीति, उद्देश्य, युद्ध को टालने हेतु किये गये उपाय आदि का विवेचन मिला। ईश्वरी प्रसाद की पुस्तक - 'मध्यकालीन भारत का संक्षिप्त इतिहास इस पुस्तक के अध्ययन द्वारा मुगल कला का उद्भव, विकास, कला गतिविधियों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। 'आइने अकबरी, अबुल फ़ज्ल, मूल फारसी से अनूदित' (हरिवशं राय शर्मा एम॰ए॰ साहित्य रत्न फिदा हुसैन खाँ एम॰ए॰, फारसी एम॰ए॰, अरबी, कामिल), यह पुस्तक अकबरनामा का तृतीय भाग है जिसके अध्ययन द्वारा मुझे अकबर की शासन व्यवस्था, उनके व्यक्तित्व दृष्टिकोण तथा जीवनशैली का उल्लेख इस पुस्तक से प्राप्त होता है, साथ ही साथ मुगल शासन काल के अन्तर्गत उनके शासन सम्बन्धित नीतियों का ब्यौरा भी लिखित है। 'Indian miniature of the Mughal court–Amina okada, पुस्तक- Mughal Administration in india, 1949- S. chand Delhi और Memorials of the jeypore Exhibition, The Razm Namah, History of war by T.H. Hendley 1883 volume vi इन पुस्तकों के अध्ययन से मुझे अकबर का व्यक्तिगत एवं व्यवहारिक सम्पूर्ण ब्यौरा, सभा का परिवेश, वेशभूषा, अलंकरण, दृश्यों का लिखित व चित्रित वर्णन प्राप्त होता है। जिसके फलस्वरुप अकबर की शासन व्यवस्था में हिन्दू तथा मुगल तत्वों के समावेश की जानकारी प्राप्त होती है।

इसके अतिरिक्त अनेक वेबसाइट, पत्र-पत्रिकाऐं, सम्पादकीय- The Mughal Book of war: A Persian Translation of the Sanskrit Mahabharat by Audrey Truschke का अध्ययन किया जिनके द्वारा इस विषय से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त कर पायी।

**परिकल्पना**

परियोजना के लिए कल्पना एक कलाकार व शोधार्थी के लिए सबसे साहसिक भूमिका निभाती है। हिन्दू महाकाव्य 'महाभारत' के फारसी अनुवादित 'रज़्मनामा' में चित्रित चित्र कलात्मक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक संदर्भ से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह 15वीं शताब्दी की अनूठी कृति व भव्य पाण्डुलिपि है। मुगलों के समय काल में भारत की धार्मिक सम्प्रभुता व कलात्मक रचनात्मकता का प्रदर्शन इन चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित है तथा यह आने वाले कलाविदों, कला विघार्थियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। इन्हीं बिन्दुओं के आधार पर इस शोध की रुप रेखा प्रस्तावित है।

**उद्देश्य**

- मनुष्य के जीवन में क्रियाओं तथा गति कार्य में कोई न कोई उद्देश्य निर्धारण से वह कार्य का मार्गदर्शन करता है तथा उद्देश्य की स्पष्टता शोधकर्ता के कार्य को दृश्यमान व सरल बना देती है।
- प्रस्तुत शोध के माध्यम से अकबर कालीन चित्रित पाण्डुलिपि 'रज़्मनामा' की कला परम्परा का अन्वेषण एवं सांस्कृतिक अध्ययन।
- फारसी में अनुवादित 'रज़्मनामा' के चित्रों की विषय-वस्तु का विश्लेषणात्मक अध्ययन व पाण्डुलिपि चित्रों के कलात्मक पक्ष का सूक्ष्मतम अध्ययन।
- रज़्मनामा की निर्माण प्रक्रिया, निर्माण उद्देश्य तथा भारतीय कला परिदृश्य में रज़्मनामा कृति का कलात्मक योगदान का मूल्यांकन करना।
- चित्रित रज़्मनामा के आधार पर समय विशेष के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवेश का विश्लेषण तथा उसके आधार कला पक्ष पर पड़ने वाले प्रभावों का सूक्ष्मतम अध्ययन समाहित है।

- मेरा अधिकतम प्रयास मूल रज़्मनामा एवं उसकी प्रतियों के चित्रों का सौंदर्यात्मक व विश्लेषणात्मक अध्ययन के प्रस्तुतीकरण पर आधारित होगा।

**चर**

1. पुस्तकालय
2. संग्रहालय के प्रबन्धक एवं सहायक
3. कला समीक्षक
4. इन्टरनेट वेबसाइट

**कार्य प्रणाली**

**अनुसंधान अभिकल्प**

'अकबर कालीन सचित्र पाण्डुलिपि "रज़्मनामा" (महाभारत) का विश्लेषणात्मक अध्ययन' हेतु वस्तु विश्लेषण विधि तथा वर्णात्मक शोध अभिकल्प का चयन किया गया है।

**प्रदत्त संकलन**

**प्राथमिक स्त्रोत** - मूल रज़्मनामा (पाण्डुलिपि) का अवलोकन, विद्वानों से साक्षात्कार, संग्रहालय एवं पुस्तकालय में प्रदर्शित रज़्मनामा की प्रतिकृतियाँ।

**द्वितीयक स्त्रोत** - पुस्तकें, प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार-पत्र, सम्पादकीय, वेबसाइट तथा शोध से सम्बन्धित पुस्तकालयों, संग्रहालयों, कलादीर्घाओं का भ्रमण।

**प्रतिदर्श** - चित्रित रज़्मनामा पाण्डुलिपि में चित्रों के छायाचित्र लगभग 100-150 तक

**सीमा**

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए शोध की परिसीमाओं व समय को ध्यान में रखते हुए मूल रज़्मनामा व उसकी प्रतिकृतियों से प्राप्त छायाचित्रों के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा।

**निष्कर्ष**

मुगल काल के अन्तर्गत ईरानी, फारसी कला तथा भारतीय सांस्कृतिक कला परम्परा का विकास हुआ। रज़्मनामा पाण्डुलिपि में उत्कीर्ण चित्र इस समन्वित विचार धारा को साक्ष्य प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति में महाभारत धर्म से जुड़ी एक मूल्यवान कृति है जिसका फारसी अनुवाद 'रज़्मनामा' (युद्ध की कहानी) के रुप में अकबर के शासन काल में चित्रित किया गया। जो मुगल काल के अन्तर्गत भारतीय परम्पराओं व भारतीय कला दर्शन की विशेषताओं को प्रकट करता है।

हम कह सकते हैं कि रज़्मनामा में चित्रित चित्रों में उस समय के लोगों के सांस्कृतिक इतिहास फिर समाज और उसकी दिन प्रतिदिन की सभी संबन्धित विशेषताओं, चित्रों की विषयगत सामग्री और तत्वों का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

**आधुनिक युग में प्रासंगिकता**

मुगलों के शासन काल के दौरान समग्र शैली परिष्कृत और स्पष्ट रुप से दरबारी शैली का अनुसरण करती है। 15वीं शताब्दी में अनेक चित्रण पाण्डुलिपियाँ निर्मित की गई। आज भी लघु चित्रकला बहुत प्रचलित है, भारत में ही नहीं अपितु देश-विदेशों में भी यह चित्रकला अपना रुप फैलाये हुए है तथा साज-सज्जा में भी यह कला बहुत उपयोग में लायी जाती है। मुगल शैली व उनके चित्र कलाकारों के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है जिसके अन्तर्गत वह चित्रों की तकनीक, विषय-वस्तु, अलंकरण, आलेखन, दृष्टिकोण, मूलतत्व, परिप्रेक्ष्य इत्यादि का आधुनिक चित्रकला में प्रयोग करते हैं। अर्थात् आधुनिक समय में समकालीन चित्रकार भारतीय मध्यकालीन चित्रकला का अनुसरण कर रहे हैं। रज़्मनामा चित्रों के द्वारा मुगल तथा भारतीय कला में सम्मिश्रण शैलियों से शोधार्थी, चित्रकार तथा कला प्रशंसकों के लिए लाभप्रद है।

## विषय विवरण

प्रस्तावना - भारतीय चित्रित पाण्डुलिपियों का विकास

प्रथम अध्याय - भारत में मुगल कला की उत्पत्ति एवं विकास

द्वितीय अध्याय - अकबर काल में चित्रित प्रमुख पाण्डुलिपियाँ

2.1 मुगल कालीन चित्रित 'नामा' पाण्डुलिपियाँ

2.2 फारसी में अनुवादित हिन्दू 'ग्रन्थ'

तृतीय अध्याय - रज़्मनामा का परिचय एवं उसके प्रमुख कलाकार व उनकी कार्य शैली

चतुर्थ अध्याय - अकबर कालीन रज़्मनामा पाण्डुलिपि में फारसी, यूरोपियन एवं भारतीय तत्व

पंचम अध्याय - रज़्मनामा की कलाकृतियों का विश्लेषणात्मक व सौंदर्यात्मक अध्ययन

5.1 आकृतियाँ

5.2 पशु-पक्षी

5.3 वनस्पति

5.4 आलेखन

5.5 भवन निर्माण

5.6 लेख एवं लिपि

**उपसंहार** - चित्रित रज़्मनामा का भारतीय चित्रकला की समृद्धि में योगदान

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रन्थ

Bibliography

Internet website

चित्र सूची

अनुसंधान अभिकल्प

**प्रस्तावना** - पाण्डुलिपि चित्रण का विकास

**प्रथम अध्याय** - प्रथम अध्याय में भारत में मुगल कला की उत्पत्ति एवं विकास का वर्णन है, जिसे मुगल राजाओं के क्रमवार इतिहास के साथ प्रस्तुत किया जायेगा। मुगल राजाओं का कला के प्रति दृष्टिकोण व समय काल में होने वाली कला उपलब्धियों व उनकी विशेषताओं का वर्णन किया जायेगा।

**द्वितीय अध्याय** - अकबर के काल में निर्मित सचित्र प्रमुख नामा (पाण्डुलिपियों) का वर्णन किया जायेगा तथा मुगल काल के अंतर्गत प्रमुख रुप से सल्तनत से सम्बन्धित पाण्डुलिपियाँ तथा फारसी में अनुवादित हिन्दू ग्रन्थों के आधार पर भी पाण्डुलिपियाँ निर्मित की गई, इन दोनों का वर्णन इस अध्याय के अन्तर्गत प्रस्तुत होगा।

**तृतीय अध्याय** - इस अध्याय में रज़्मनामा का परिचय एवं उसके प्रमुख कलाकार व उनकी कार्य शैली का अध्ययन तथा विभिन्न पर्वों के आधार पर चित्रित रज़्मनामा को प्रस्तुत किया जायेगा।

**चतुर्थ अध्याय** - प्रारम्भिक मुगल कालीन चित्रकला में फारसी प्रभाव दृष्टव्य होता है। आगे आने वाले कालों में मुगल कला यूरोपीय एवं भारतीय कला तत्वों से भी प्रभावित रही। इन तत्वों का सारगर्भित विवेचन इस अध्याय में प्रस्तुत किया जायेगा।

**पंचम अध्याय** - इस अध्याय के अन्तर्गत रज़्मनामा के चित्रों का कलात्मक प्रस्तुतिकरण किया जायेगा जिसके अंतर्गत चित्रों में निर्मित आलेखन, वनस्पति तथा प्राकृतिक परिवेश, आकृतियाँ, भवन निर्माण, लेख एवं लिपि, पशु-पक्षी आदि का अध्ययन करते हुए कलाकृतियों का विश्लेषणात्मक व सौंदर्यात्मक वर्णन किया जायेगा।

**उपसंहार** - चित्रित रज़्मनामा का भारतीय चित्रकला की समृद्धि में योगदान

दिनाँक - 27/ August/2021 शोध छात्रा

**भावना राठौर**

## संदर्भ ग्रन्थ


- आर, शरण, (2002) ''भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास'' राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
- उमर, मुहम्मद, (1996),''भारतीय संस्कृति का मुसलमानों पर प्रभाव, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, नवम्बर।
- काम्बोज, भगवती प्रकाश, (1993),''प्राचीन यूरोपीय कला'', तृतीय।
- खन्ना, मीनाक्षी, (2016) ''मध्यकालीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास, ओरिएन्ट ब्लैकस्वान।
- गुप्ता, रामनाथ, (1994),''मध्यकालीन भारतीय कलायें उनका विकास'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- गुप्ता, शिव कुमार, (1999),''मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
- गौतम, नन्दकिशोर, निर्मल,(1986),''महाभारत में सांग्रमिकता'' (महाभारत की युद्ध कला) निर्मल प्रकाशन, जयपुर।
- चतुर्वेदी, गोपाल मधुकर ,(1982),''भारतीय चित्रकला'', ऐतिहासिक संदर्भ, जाग्रति प्रकाशन, अलीगढ़।
- चन्द्र, सतीश, (1997),''मध्यकालीन भारत, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण दिल्ली।
- तिवारी, रघुनन्दन, (1976),''भारतीय चित्रकला और उसके तत्व'',वाराणसी भारतीय पब्लिशिंग प्रसाद हाउस।
- दीबा, फराह, (2012),''मुगल चित्रकला'', प्रथम संस्करण।
- मित्तल, सतीश चन्द्र, (2007)''मुस्लिम शासक भारतीय जन-समाज'' (सातवीं शताब्दी से 1857 ई॰ तक)।
- नागौरी, एस॰एन॰,(1997),''मध्यकालीन भारतीय संस्कृति'' जयपुर।
- फ़ारुकी, अमर ,(2019),''प्राचीन और मध्यकालीन सामाजिक संरचनाएँ और संस्कृतियाँ, अनुवादक शहीद अख़्तर, ग्यारवीं संस्करण।
- महाजन, बी॰डी॰, (1993)''मध्यकालीन भारत'' (1000ई॰ से 1761ई॰ तक) एस॰ चन्द एण्ड कम्पनी लि॰ राम नगर नई दिल्ली।
- वर्मा, सोम प्रकाश, (1998),''मुगल चित्र शैली'' पंचशील प्रकाशन, जयपुर प्रथम संस्करण।

- सांकृत्यानन, राहुल,(1997),"अकबर" (किताब महल, इलाहबाद संस्करण)

**Bibliography**

- Chand, S., (1949)'Mughal Administration in india'.
- Clarke, Stanley, (1921)'Indian Drawing of Babur Nama: School of Humayun, London.
- Das, Ashok K., (2005) 'Painting of the Razmnama', The Book of war,
- Das, Ashok K.,(1967)'The Mughal royal hunt in miniature Paintings'
- Hendley,T.H.(1883),'Memorials of the jeypore Exhibition, The Razm Namah History of war, volume vi.
- Hosten, H.S.,(1922),'European art at the Mughal court', JUPHS,3.
- Khandalvala, K.and S.Doshi,(1987),'A Sub-imperial Akbari period Razm nama'of AD1605, A Collector's Drama, Indian Art in the collection Of Basant and Birla Academy of Art and Culture Bombay.
- Marek, Jane Gaston,(1965),'Oriental miniature: Persian, Indian and Turkish. London.
- Moreland, W.H. (1920),'India at the Death of Akbar' Delhi.
- Okada, Amina,( 1992) 'Indian miniature of the Mughal court'
- Ray A. Sanyal H. and Ray, S.C 'Three miniatures from the Razmnama of AD 1598, Indian Studies Delhi, n.d
- Skelton, R.,(1969),'Mughal Paintings from the Harivansh Mauscripts', Victoria and Albert Museum, year Book no.1, London.
- Suleiman, Hamid,(1970) 'Miniature of Babur Nama: Academy of Science of the Uzbek S.S.R,
- Verma, S.P,(1999),'The Elephant in Mughal Painting', flora and fauna in Mughal Art, Mumbai,
- Verma, S.P, 'Ordinary Life of Mughal india' The Evidence from Painting (Aryan Book International New Delhi)

**Internet website**

- https://indianexpress.com/article/lifestyle/art-and-culture/why-are-historians-and-scholars-of-art-worried-about-a-persian-translation-of-the-mahabharata-6898355/
- https://en.wikipedia.org/wiki/Razmnama

- https://ia800304.us.archive.org/2/items/MemorialsOfTheJeyporeExhibitionRazmnamah/Hendley_memorialsOfTheJeyporeExhibitionwoPics.pdf
- https://blogs.bl.uk/asian-and-african/2016/04/razmnamah-the-persian-mahabharata.html
- https://qz.com/india/1617512/the-razmnama-akbars-persian-translation-of-the-mahabharata-is-locked-away-in-jaipur/
- http://www.mapinpub.in/bookinfo.php?title=Paintings_of_Razmnama
- https://en.wikipedia.org/wiki/Razmnamah_(British_Library,_Or._12076)
- https://videshisutra.wordpress.com/2013/02/22/king-akbars-mahabharata-or-the-razmnama-book-of-wars/
- https://www.google.com/search?q=google+translate&oq=&aqs=chrome.0.35i39i362l8...8.313995732j0j15&sourceid=chrome&ie=UTF-8
- https://commons.wikimedia.org/wiki/Category:Razmnama
- https://thegreatindianperformance.wordpress.com/2010/07/14/razmnama/

**परिशिष्ट**

**चित्र सं॰ 1 महाभारत का संस्कृत से फारसी में अनुवाद करने वाले हिन्दू और मुस्लिम विद्वानों का चित्रण, 1598-99, Image source- https://en.wikipedia.org/wiki/Razmnama**

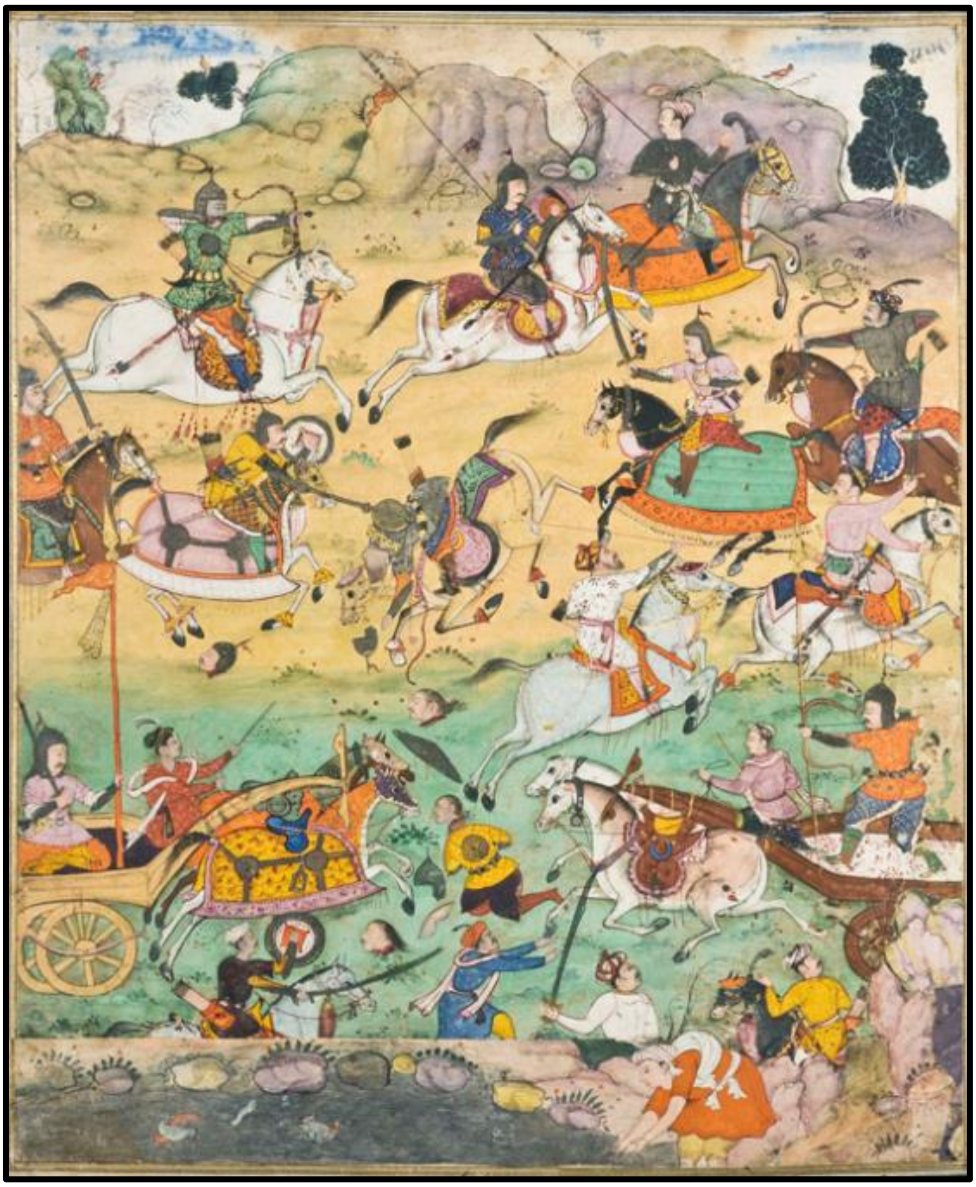

**चित्र सं. 2 दुर्योधन और भीम की लड़ाई, रज़्मनामा के 1616-1617 संस्करण से, Image Source- https://videshisutra.wordpress.com/2013/02/22/king-akbars-mahabharata-or-the-razmnama-book-of-wars/**

**चित्र सं. 3 कृष्ण और पाण्डव भीष्म की मृत्युशैय्या पर उनसे मिलने जाते हुये 1598, Image source-https://rarebooksocietyofindia.org/grid-layout.php?c=Rare%20Paintings&page=4**

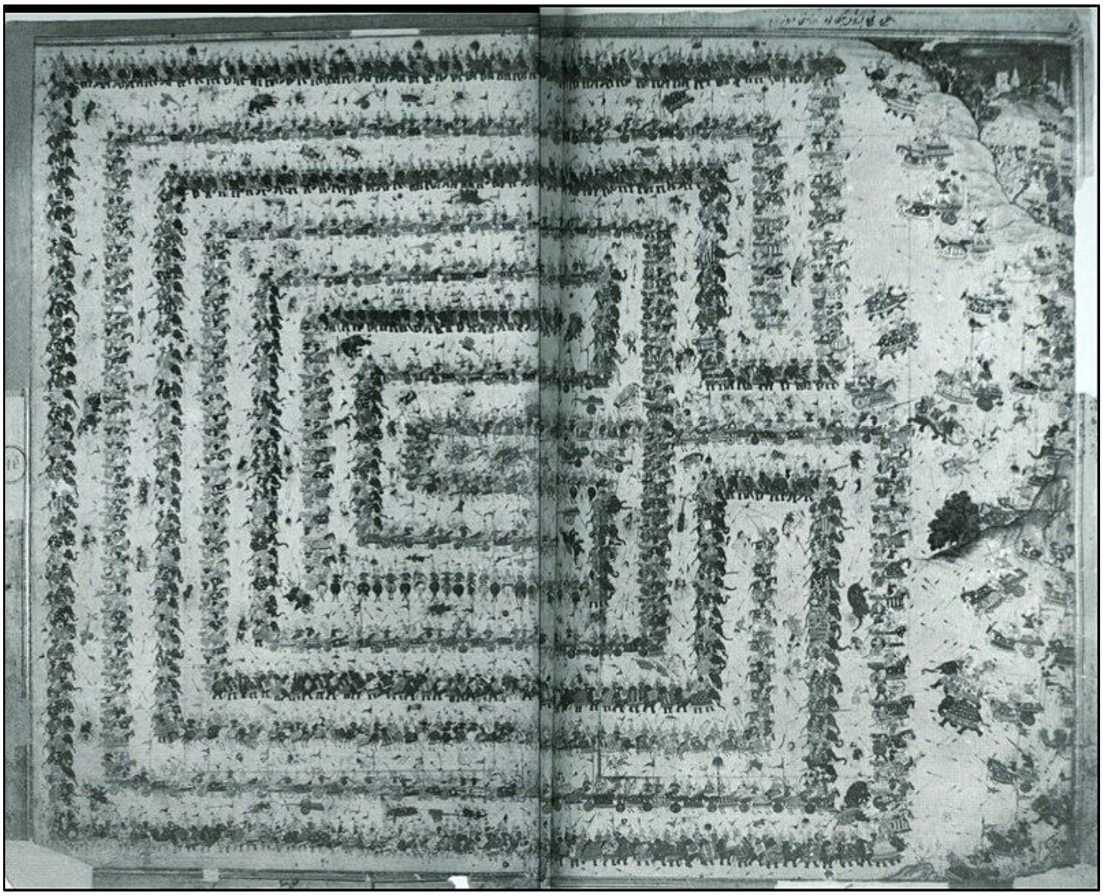

**चित्र सं॰ 4 कौरवों के चक्रव्यूह में अभिमन्यु का वध तारा द्रोण पर्व दसवंत,Image Source-**
**https://en.wikipedia.org/wiki/Padmavyuha**